जागरण के गीत : लहू के छंद



रचनाकार
गणेश विशारद
दिनेश भ्रमर : पाण्डेय आशुतोष

जागरण के गीत : लहू के छन्द

उन अमर शहीदों
को, जो सीमा पर लड़ते-
लड़ते देश के काम
आकर, शहादत
की परम्परा
को
नई कड़ी
दे
गए।

★

रचनाकार
गणेश विशारद
दिनेश भ्रमर : पाण्डेय आशुतोष

सम्पादक
रमेशचन्द्र झा



प्रकाशक— साहित्य संगम
मोतिहारी, बिहार



बितरक— त्रिवेणी
साहित्य संगीत नाट्य संगम
बगहा, चम्पारण।



मुद्रक— प्रकाश प्रेस,
मो ति हा री



मूल्य पचीस नए पैसे

संकोची स्वभाव से, स्वस्थ विचार से,
साधक एकांत के, गायक दिगंत के,
सर्जक स्वप्न के, आराधक सत्य के,
हृदय स्वच्छ शांतसिन्धु, प्रतिष्ठित
प्राण, सुसंस्कृत व्यक्तित्व और ले देकर-

—गणेश विशारद

जाग हिन्दुस्तान

आज हिमगिरि है जगाता, जाग हिन्दुस्तान !
काल-भिक्षुक-सा खड़ा है माँगता बलिदान !
सावधान ! घड़ी परीक्षा की निकट है आज,
लुट न जाये देश ! जननी जन्मभू की लाज,
बुद्ध - गाँधी स्वर्ग से हैं दे रहे आवाज,
ओ प्रतापी ! साज केसरिया बदन पर साज,
रण निमन्त्रण पर न भेजो शांति का संदेश,
क्या कहेगी तुम्हें "झाला" की जगी संतान !
कुरुक्षेत्र पुकारता है वीर अर्जुन ! बोल,
धर्मराज विमूढ़, तू गांडीव अपना तोल,
फूँक भीषण शंख, फाटक व्यूह का तुम खोल,
व्याप्त हो जाये धरा से गगन तक भूडोल,
'यतो धर्मः ततोजय' कौरव गये हैं भूल,
ओ गदाधर भीम ! दो अपनी जरा पहचान !

खोखला-सा लग रहा है 'शील' का सिद्धांत
जब कि उद्घोषक हुआ खुद युद्ध से आक्रांत
बल बिना है शांति की यह धारणा ही भ्रांत,
यह महाभारत नहीं होगा निकट में शांत,
युद्ध का है पर्व मत बैठो नकुल सहदेव !
तुम न जागे तो करेंगे क्या भला भगवान ?
क्या लुटेगा न्याय ? होगी शांति अब लाचार ?
क्रूरता के सामने मर जायगा क्या प्यार ?
मनुजता दम तोड़ देगी दनुजता के द्वार ?
बंधुता के कंठ से टकरायगी तलवार ?
यदि नहीं तो मौन तोड़ो, उठ करो हुंकार,
शक्तिशाली इन्द्र को यह वज्र का आह्वान !
न्याय पर अन्याय का ऐसा प्रबल आघात—
देवता के मानसर पर दैत्य का उत्पात—
सत्य पर यह झूठ का घनघोर उल्कापात—
नियति के क्रम में अचानक आसुरी व्याघात-
सह सकेगा विश्व का कोई न पानीदार ।
है न सम्भव स्वर्ग पर शासन करे हैवान ।
यह नहीं लद्दाख, भारतवर्ष की यह शान,
यह नहीं नेफा, यही युगधर्म है, ईमान,
वेद त्रिपिटिक बाइबिल इंजिल पुरान कुरान,
है यही इसके लिये सर्वस्व ही बलिदान,
चीन ! तेरी यह चुनौती है हमें स्वीकार,
क्योंकि जय पाता कभी भी है न बेईमान ।।

भारतवासी की भुजा

जिसकी साँसों में आँधी है मुट्ठी में अंगारे—
उस भारत को भला आज नादान चीन ललकारे ?
बच्चों का यह खेल नहीं है यह इस्पात कड़ा है,
एक फारमोसा से भारत सचमुच बहुत बड़ा है.
सँभलो, नीच घमण्डी चाऊ ! भागो ! लौटो घर को
कहीं आँख खोलनी पड़े मत प्रलयंकर शंकर को,
आश्चर्य हो रहा जहाँ मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे—
उस भारत को भला आज नादान चीन ललकारे ?

गौतम को गोली देने वाले ! क्या यही दया है ?
क्यों तुम्हारी आँखों में क्या कुछ भी नहीं हया है ?
तो सुन लो हर बूँद खून की जग कर बोल रही है
हर भारतवासी की भुजा जवानी तोल रही है,
है गवाह जिसके इतिहास सूर्य भी चाँद सितारे—
उस भारत को भला आज नादान चीन ललकारे ?
ओ तिब्बत के खूँ से अपने हाथ रंगाने वालों !
पंचशील पर, मानवता पर दाग लगाने वालों !
आनेवाला समय नहीं गफलत में भी चूकेगा !
निश्चय सारा विश्व एक दिन तुम पर ही थूकेगा !
भीख मांगकर खाता रहा एक दिन जिसके द्वारे
उस भारत को भला आज नादान चीन ललकारे ?
जब रह जाता नहीं देश में अन्नवस्त्र का संबल
तो यह युद्ध निमन्त्रण देना भी शायद है कौशल
शर्म करो, बेशर्म चीन ! यह तेरा युद्ध-निमंत्रण—
जगा चुका है आज विश्व को, जाग चुका है कणकण
जिसके सारे काम नेहरू बन खुद कृष्ण सम्हारे
उस भारत को भला आज नादान चीन ललकारे ?

दुर्बल तन के, सशक्त मन के, आकृति चिन्तक की, प्रवृत्ति साधक की, अधिकारी भाषा के, धनी भावना के, विद्रोही स्वर के, छंद लहर के। प्रतिनिधि मौलिक परम्परा के, प्रेरक गीत की नई दिशा के, कुल के संगम—

—दिनेश 'भ्रमर'

आग रचो : तूफ़ान रचो

आज राष्ट्र की नस-नस में जागी फिर से तरुणाई।
सावधान हो जाओ फिर बलिदानी बेला आई॥
हर मुस्लिम का फर्ज आज है नेक बहादुरशाह बने,
आज जरूरत उस सौदागर की, जो भामाशाह बने,
ऐसी बात न निकले मुख से जो बाहर अफ़वाह बने,
निकले आह अगर भीतर से भारत मां की आह बने,
सरहद से भारत मां ने सबको आवाज लगाई!
सावधान हो जाओ, यह बलिदानी बेला आई!!
माताओं से कह दो, वह फिर वीर 'भरत हम्मीर' जने
मजदूरों से कह दो, उनके घर गोली शमशीर बने
हर सैनिक से कह दो अब वह भारत की तकदीर बने,
राख बने बारूद अगर तो हर तिनका शहतीर बने,
हर शबनम है आग बनी, तूफ़ान बनी पुरवाई!
सावधान हो जाओ फिर बलिदानी बेला आई!!

आज 'चन्द' फिर छंद रच रहा जगनिक गाता आल्हा है
इधर 'सिक्ख', गोरखे सजे तो उधर पेशवा, झाला है
वीर शिवा के कर कृपाण तो राणा के कर भाला है
प्राण-दान के लिए आज बच्चा-बच्चा मतवाला है !!
सीमा-पांचाली ने फिर केशव को हांक पठाई !
सावधान हो जाओ, फिर बलिदानी वेला आई !!

चिन्ता क्या जब रक्षा को पंजाब खड़ा, भोपाल खड़ा,
चिन्ता क्या जब रक्षा को सरदार जवाहर लाल खड़ा,
चिन्ता क्या जब रक्षा को ब्रह्मपुत्र असम बन ढाल खड़ा,
चिन्ता क्या हम शेरों से लड़ने को जब बंगाल खड़ा,
यहां मौत से बच्चा बच्चा करता रोज सगाई !
सावधान हो जाओ, फिर बलिदानी वेला आई !!

सही सफलता तब है, जब यह चक्र प्रगति का, बन्द न हो,
सही सफलता तब है, जब जीवट का दीपक मन्द न हो,
कसम जवानों की बहनों ! हाथों में बाजूबन्द न हो,
सही सफलता तब है, जब पैदा कोई जयचन्द न हो,
हर बूढ़ा है कुँवर सिंह, हर ललना लक्ष्मीबाई !
सावधान हो जाओ फिर बलिदानी वेला आई !!

कसम लेखनी की है कवियो यदि तुम गीत-वितान रचो,
जो भी रचो देश की खातिर आग रचो, तूफान रचो,
जो भी पढ़े आग बन जाये ऐसा छंद-जवान रचो,
दुश्मन की छाती पर असि से महाकाव्य बलिदान रचो,
'मत चूको चौहान' आज देती आवाज सुनाई !
सावधान हो जाओ फिर बलिदानी वेला आई !!

पौरुष का अंगार

बेशरम चीन ! तुम मत मदहोश बनो इतना
तेरा यह छल जाल आज कलाई खाती है.
जो दीपक तुमने पंचशील का बाला था
तेरे हाथों ही बुझती उसकी बाती है !

तेरी बातों पर हमें भरोसा रहा सदा,
तेरे तबक का रूप न हमने जाना था !
तेरी नकली चालों में हम सब भूले थे
लेकिन यह असली रूप नहीं पहचाना था !

तेरी गद्दारी का यह नंगा नृत्य देख
सबके नयनों का आंगन गीला-गीला है !
यदि तुम्हें न हो विश्वास जरा ऊपर देखो
बन गया आज का मौसम तक जहरीला है !

लगता है तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई आज,
जो किये जा रहे बिन मतलब की मनमानी
लज्जा को त्याग न तुम इतने बेशरम बनो,
क्या सूख गया है तेरी आँखों का पानी ?

सहने की सीमा तक हम मौन बने आए,
अब पौरुष का अंगार निकलने वाला है !
नगराज हिमालय की बर्फीली चोटी से
बारूदों का भंडार निकलने वाला है !

तुम भूल गए क्यों 'भूषण' की रचनाओं को
जिनमें सोयी है विकट क्रांति की चिनगारी !
अब भी उत्तेजक छंद 'चन्द' का जिन्दा है
जो भस्मसात कर सकता तेरी फुलवारी !

फिर 'बिस्मिल' की पुरजोर शायरी व्याप्त यहाँ
अब पुनः 'भगत आजाद' पनपने वाले हैं,
जयचन्द, गजनवी का दल का मान यहाँ
पृथ्वी से 'पृथ्वीराज' निकलने वाले हैं !

अब उदय रक्त हो रहा सन्निहित भाल भाल में
हे कुँवर, अमर का झंडा फहराने वाला,
लक्ष्मीबाई, सत्या मीरा के प्राणों के
सम्मुख कोई हिम्मत रखना जाने वाला ?

यह शेरशाह की धरती है चीनी भाई !
जिसके भय से सारा भूमडल थरायें।
यदि पुनः द्रोण ने चक्र व्यूह रच दिया यहाँ
तो सब तेरा हथियार चमक कर रह जाए !

हम भीष्म पितामह के वंशज हैं जानो तुम
मेरी अंतिम साधना स्वयं कुर्बानी है !
अर्जुन का सुन हुंकार काँपता कुरुक्षेत्र,
आ रही भयावह बनकर काल भवानी है !

तुम याद करो राणा के विषधर भाले को,
चेतक की टापों को तुम फिर से याद करो !
तुम व्यर्थ किसी की बगिया पर बरसा शोले
मत अपना बसा हुआ गुलशन बरबाद करो !

है फैल रही जिस धरती पर नव अरुण-किरण
हम आने देंगे उस धरती पर शाम नहीं !
तुम व्यर्थ झूलते हो कश्मीरी सपनों में
बख्शी 'गुलाम' बन सकता कभी गुलाम नहीं !

(आकाशवाणी, पटना के सौजन्य से)

मेरा सलाम

मेरा सलाम फौलादी वीर जवानों को,
मेरा सलाम सीमा पर खड़े सिपाही को,
जिसने अपने प्राणों को भेज दिया रण में,
मेरा सलाम है उस दुलहन नवब्याही को
मेरा सलाम कह दो उन वीर बालकों से,
जिनमें 'हमीर, बादल' के स्वप्न पला करते,
मेरा सलाम कह दो उन सजग प्रहरियों को
जो गोली के साँचों में स्वयं ढला करते,
है राष्ट्र पूजता उन्हें राष्ट्र को जो पूजें
जो जीवन का संगीत समर में गाते हैं
सिर कफन बाँध अरि की छाती पर हो सवार
आओ 'मारो-मारो' आवाज़ लगाते हैं

कवियो ! है कसम तुम्हें अब भारत माता की
जो कलम तुम्हारी गजल रचे, शृंगार करे,
कह दो उससे मौसम है सारा बदल गया,
अपने भीतर सिन्दूर नहीं, अंगार भरे

अब राजमहल के गीत न गाए जायेंगे।
अब हर कवि को सरहद का गीत सुनाना है,
जो कल का वीर सिपाही है, उस बच्चे को,
पीछे 'दिल्ली' पहले 'लद्दाख' दिखाना है

'नेफा' 'लद्दाख' बनेगा कल का तीर्थस्थान
वह 'होशियार सिंह' कल देवता कहाएगा,
उसका वह गाँव बनेगा कल का राजघाट
हर जाने वाले का सिर खुद झुक जाएगा,

दुश्मन का हाथ चमन तक नहीं पहुंच पाए,
इसलिए फूल की जगह शूल उपजाना है.
गेहूं की बाली हंसे धान भी लहराए
पर साथ-साथ गोली बारूद बनाना है.

अब हर किसान के कर में होंगी बन्दूकें,
शिशु के हाथों राइफलें और गोली होगी,
भारत माँ के हर गाँव-गाँव, हर बस्ती में,
सिर कफन बाँधने वालों की टोली होगी

बच्चों को नाइलन शर्ट नहीं चाहिए आज,
उनको तो अब फौजी वर्दी पहनानी है !
युद्धं शरणम् की सीख न अर्जुन माँग रहा
उसको अब केशव की गीता सिखलानी है।

आत्मा श्रमिक की, आशा कृषक के,
साधक समता के, आराधक युग के,
नव यौवन के, दृढ़ जीवन के, अमर
क्रांतिकारी का, अभ्यन्तर चिन्तन का,
भाषा प्राण की, शोला भगवान की,
कुल मिलाकर—

—पाण्डेय आशुतोष

कवि के नाते

मेरी जननी जन्म-भूमि पर 'चंगेजों' ने आँख उठाई!
उठो आज जगनिक के अल्हा, भूषण जगा चन्द बरदाई!!
उठो, आज सरहद पर आकर हवा एक ललकार बन गयी
उठो, आज गौरी शंकर की चोटी तक फुंकार बन गयी
उठो देश के सोने वालो उठो, किरण में धार बन गयी
उठो, आज बहनो के हाथों की चूड़ियाँ कटार बन गयी
आज 'अग्नि वीणा' की लपटों पर नजरुल ने कविता गायी!
उठो, आज जगनिक के अल्हा, भूषण जगा चन्द बरदाई!!

बन्द करो वृन्दावन वंशी, हमें तीर-संधान चाहिये,
राज पुताना देते हो तो दो, 'भामा' का दान चाहिये,
मस्जिद वालो से 'अशफाक' माँगता है, बलिदान चाहिये,
सुनो कलीसा! इस मिट्टी पर तुम को भी अभिमान चाहिये
स्वतंत्रता के लिये गले मिल रहे जनम से बिछुड़े भाई!
उठो! आज 'जगनिक' के अल्हा, भूषण जगा चन्द बरदाई!!
असम कसम है ब्रह्मपुत्र की, तिनका-तिनका तीर बनादो
धरती के नीचे का लोहा कहता है शमशीर बनादो,
पत्थर की छाती पर बलिदानों की अमिट लकीर बनादो,
एक-एक रज-कण में फूँको मंत्र, उसे हम्मीर बना दो,
नीच पड़ोसी को इन घड़ियों में देता कश्मीर दिखाई!
उठो, आज जगनिक के अल्हा, भूषण जगा चन्द बरदाई!!
पहले उसे मार दो गोली जो काले बाजार चलाते,
मंचों पर भाषण देने वालों से कहो कि खेत बुलाते,
जो मशीन के पास बैठ ऊँघते उन्हें भी चलो जगाते
मुझे जागरण को लाने का हक है कवि होने के नाते,
देने को तैयार खड़ा है भारत का इतिहास गवाही!
उठो, आज 'जगनिक' के अल्हा, भूषण जगा चन्द बरदाई!!

सोनेवालो उठ जाओ

सोने वालों उठ जाओ देखो भोर हुई,
इस आँगन पर मनहूस मेघ घिर आया है.
अपनी सीमा पर टैंकों तोपों का जमाव,
आफत का घना अँधेरा कुहरा छाया है.

बन गयी आज अपनी फिर धरती कुरुक्षेत्र,
वह शान्ति, अहिंसा की पुकार बेकार हुई,
हिन्दी-चीनी भाई-भाई की वह माला,
गर्दन के पास पहुँच सहसा तलवार हुई.

मुरझाने दो मत शालिमार के फूलों को,
नगपति के शिखरों को ऊपर उठ जाने दो,
केशर की क्यारी में लग जाये आग नहीं,
इस कुतुब लाट पर मत कौवों को गाने दो.

आ गयी जरूरत है सतलज के बेटों की,
फिर से कृपाण की कला उन्हें दिखलानी है,
खालसा हमारा सजे, फतह इस गुरु की हो
पंजाब ! तुम्हारे ही हाथों में पानी है,

केहरि ! तैयार रहो तुम अपने बख्तर में,
क्या पता कि कब कारवाँ शत्रु का कूच करे,
'धनगर्ज' आग उगले दुश्मन की छाती पर
जबतक अपनी तोपों में वह बारूद भरे !

सैनिको ! कहो कि अब घर में जयचन्द नहीं
हम को मंदिर, मस्जिद, गिरजा प्यारा है
हर सुबह बजा करते हैं गिरजों के घन्टे
हर शाम विनय करता अपना गुरुद्वारा है,

संग्राम, बहादुरशाह शिवा की धरती पर
दुश्मन चुपके बारूद बिछाने आया है,
आचार्य द्रोण औ, भीष्म पितामह के रथ पर
इस बार 'शिखंडी' तीर चलाने आया है।

सत्तावन का वह कुँअर सिंह है जाग उठा,
उसके लोहू में आयी नयी रवानी है,
गीदड़ ललकारें भले रात में पर दिन में
ढूंढ़े से उनको मिलती नहीं निशानी है,

लाखों जवान हम भारत माँ के कहते हैं,
यह धरती का हम स्वर्ग नहीं तुम को देंगे
तेरे शोणित के प्यासे उन अस्त्रों से हम
अपने इस फौलादी सर को टकरा देंगे !

मेरे निशात में सदा बहारें गायेंगी,
हंसों को मानसरोवर में रहना होगा,
सावन-भादो गंगा-यमुना में लहराये,
संगीत, तोप, तलवार, तीर, गहना होगा !

(आकाशवाणी, पटना के सौजन्य से)


साहित्य-संगम
मोतिहारी • (बिहार)